भागाभागाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया सव्व-जीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे- अणंतभाग-असंखेज्जदिभाग-संखेज्जदिभागहाराणं भागसण्णा, अणंताभागा असंखेज्जाभागा संखेज्जाभागा एदेसिमभागसण्णा। भागो च अभागो च भागाभागा, तेसिमणुगमो भागाभागाणुगमो, तेण भागाभागाणुगमेण एत्थ अहियारो त्ति भणिदं होदि। भागाभागणिद्देसो सेसाणियोगद्दारपडिसेहफलो। णिरयगइ णिद्देसो सेसगई पडिसेहफलो णेरइ[1]यणिद्देसो तत्थतणपुढविकायइयादिपडिसेहफलो। सव्वजीवाणं कइत्थओ णिरयगईए णिरंतरं वसदि त्ति पुच्छा कदा होदि। किमणंतिमभागो किमणंता भागा किमसंखेज्जा भागा किमसंखेज्जदिभागो किं संखेज्जदि-भागो किं संखेज्जा भागा होंति त्ति भणिदे तण्णिण्णयट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

अणंतभागो ॥ २ ॥

भागाभागानुगमसे गतिमार्गणाके अनुसार नरकगतिमें नारकी जीव सर्व जीवोंकी अपेक्षा कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ १ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अनन्तवां भाग, असंख्यातवां भाग और संख्यातवां भाग, भागहारोंकी 'भाग' संज्ञा है; तथा अनन्त बहुभाग, असंख्यात बहुभाग और संख्यात बहुभाग, इनकी 'अभाग' संज्ञा है। 'भाग और अभाग' इस प्रकार द्वंद्व समास होकर 'भागाभाग' पद निष्पन्न हुआ है। उन भागाभागोंका जो अनुगम अर्थात् ज्ञान है इसी का नाम भागाभागानुगम है। इस भागाभागानुगमका यहां अधिकार है, यह उक्त कथनका अभिप्राय है। 'भागाभाग' निर्देशका फल शेष अनुयोगद्वारोंका प्रतिषेध है। 'णिरयगदि' पदके निर्देशका फल शेष गतियोंका निवारण करता है। 'नारकी जीवों' का निर्देश वहांके पृथिवीकायकादि जीवोंके प्रतिषेधके लिये है। सूत्रमें 'सर्व जीवोंके कितने वे भाग प्रमाण नरकगतिमें निरन्तर रहते हैं' यह प्रश्न किया गया है। क्या अनन्तवें भाग, क्या अनन्त बहुभाग, क्या असंख्यात बहुभाग, क्या असंख्यातवें भाग का संख्यातवें भाग और क्या संख्यात बहुभाग प्रमाण नारकी जीव वहां रहते हैं, ऐसा पूछनेपर उसके निर्णयार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

नरकगतिमें नारकी जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २ ॥

---

१. मु. प्रतौ-द्दारपडिसेहफलो णिरइय इति पाठः ।

तं कधं? णेरइएहि घणंगुलबिदियवग्गमूलमेत्तसेडिपमाणेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। लद्धं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं काऊण रूवं पडि दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं णेरइयपमाणं होदि। तेण णेरइया सव्वजीवाणमणंतभागो त्ति वुत्तं होदि।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

सत्तण्हं पुढवीणं णेरइएहि पुध पुध सव्वजीवरासिम्हि भागं घेत्तूण लद्धं विरलिय पुणो सव्वजीवरासिं सत्तण्णं विरलणाणं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं जहाकमेण पढमादीणं सत्तण्णं पुढवीणं दव्वं जेण होदि तेण णेरइयभंगो सत्तण्णं पुढवीणं जुज्जदे।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४ ॥

एदस्स अत्थो– तिरिक्खा सव्वजीवाणं किमणंतिमभागो किमणंता भागा किमसंखेज्जदिभागो किमसंखेज्जा भागा किं संखेज्जदि भागो किं संखेज्जा भागा होंति त्ति पुच्छा कदा। तत्थ छसु वियप्पेसु एक्कस्सेव गहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि–

वह कैसे? घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित जगश्रेणीप्रमाण नारकियोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर सर्व-जीवराशिके प्रथमवर्गमूल आते हैं। लब्धराशिका विरलन करके सर्व जीवराशिको समखण्ड कर प्रत्येक एकके प्रति देनेपर उसमें एक रूप के प्रति जितनी राशि प्राप्त हो तत्प्रमाण राशिनारकियोंका प्रमाण होती है। इस कारण 'नारकी जीव सर्व जीवराशिके अनन्तवें भागप्रमाण हैं' ऐसा कहा है।

इसी प्रकार सात पृथिवियोंमें नारकी जीव सर्व जीवराशिके अनन्तवे भाग प्रमाण हैं ॥ ३ ॥

सात पृथिवियोंके नारकियोंका पृथक् पृथक् सर्व जीवराशिमें भाग देकर जो लब्ध हो उसका विरलन कर पुनः सर्व जीवराशिको सात विरलनराशियोंके समखण्ड करके देनेपर उसमें एक रूप के प्रति प्राप्त राशि चूंकि क्रमशः प्रथमादिक सात पृथिवियोंका द्रव्य होता है, इसलिये सात पृथिवियोंके भागाभागको नारकियोंके समान कहना युक्त है।

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४ ॥

इसका अर्थ – 'तिर्यंच जीव सर्व जीवोंके क्या अनन्तवे भाग प्रमाण हैं, क्या अनन्त बहुभाग प्रमाण हैं, क्या असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं, क्या असंख्यात बहुभाग प्रमाण हैं, और क्या संख्यातवें भाग प्रमाण है, क्या संख्यात बहुभाग प्रमाण हैं, इस प्रकार यहां पृच्छा की गई है। उन छह विकल्पोंमेंसे एकेक ही ग्रहणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं–

अणंता भागा ॥ ५ ॥

तं जहा- सिद्ध-तिगदिजीवेहि सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय रूवं पडि दिण्णे एगरूवधरिदं सिद्ध-तिगदिजीवपमाणं होदि। तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागा जेण तिरिक्खाणं पमाणं होदि तेण तिरिक्खा सव्वजीवाणमणंताभागा त्ति सुत्ते उत्तं।

पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता, मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी मणुसअपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६ ॥

सुगममेदं, पुव्वं परूविदत्तादो।

अणंतभागो ॥ ७ ॥

पुव्वुत्तछव्वियप्पेसु एदे जीवा अणंतभागवियप्पे चेव अत्थि, अण्णत्थ णत्थि त्ति एदेण सुत्तेण परूविदं। एत्थ पुव्वुत्तअट्ठवियप्पजीवपमाणेण दव्वाणिओगद्दारादो

तिर्यंच जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ५ ॥

वह इस प्रकार है- सिद्ध और तीन गतियोंके जीवोंसे सर्व जीवराशिको अपवर्तित कर जो लब्ध हो उसका विरलन कर सर्व जीवराशिको समखण्ड करके एक एक के प्रति समान खंड करके देनेपर एक रूप धरित सिद्ध और तीन गतियोंके जीवोंका प्रमाण होता है। उसमें एक रूप धरित राशिको छोडकर शेष बहुभाग चूंकि तिर्यंचोंका प्रमाण होता है, अतएव 'तिर्यंच सर्व जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं' ऐसा सूत्रमें कहा है।

विशेषार्थ- यहां तीन गतिसे तात्पर्य नरक, मनुष्य और देवगति से है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव; तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यनी और मनुष्य अपर्याप्त जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, पूर्वमें प्ररूपण किया जा चुका है।

उक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ७ ॥

पूर्वोक्त छह विकल्पोंमेंसे ये 'अनन्तवे भाग' विकल्पमें ही हैं, अन्य विकल्पोंमें नहीं हैं, ऐसा इस सूत्र द्वारा प्ररूपण किया गया है। यहां द्रव्यानुयोगद्वारसे जाने गये पूर्वोक्त आठ प्रकार रूप

अवगएण पुध पुध सव्वजीवे अवहारिय[1] लद्धसलागमेत्तखंडाणि सव्वजीवरासिं करिय तत्थ एगभागपमाणमप्पप्पणो जीवपमाणं होदि त्ति अवहारिय एदे अट्ठ जीवभेदा सव्वजीवाणमणंतिमभागो होदि त्ति णिच्छओ कायव्वो ।

देवगदीए देवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८ ॥

देवगदीए पुढविकाइयादिया अण्णे वि जीवा अत्थि, देवा त्ति वयणेण तेसिं पडिसेहो कदो । सेसं सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ९ ॥

सुगममेदं, अणप्पिदपंचभंगे ओसारिय अप्पिदेकभंगम्मि उप्पादिदणिच्छयादो गहिदगहिदगणिएण पुव्वमेव जणिदप्पसंसकारादो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा ॥ १० ॥

णवरि अप्पप्पणो जीवाणं पमाणमवहारिय तेण सव्वजीवरासिमोवट्टिय लद्धेण

जीवोंके प्रमाणसे पृथक् पृथक् सर्व जीवराशिको अपहृत करके लब्ध शलाकाप्रमाण खण्डप्रमाण सर्व जीवराशिको करके उसमें एक भागप्रमाण अपने-अपने भेदमें स्थित जीवोंके प्रमाण होता है, ऐसा निश्चय कर ये आठ जीवभेद सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं, इस प्रकार निश्चय करना चाहिये ।

देवगतिमें देव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८ ॥

देवगतिमें, अर्थात् देवलोकमें, पृथिवीकायिकादिक अन्य भी जीव हैं, उनका प्रतिषेध 'देव' इस वचनसे किया है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

देव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ९ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वह अविवक्षित पांच भंगोंको हटा कर विवक्षित एक भंगमें निश्चयको उत्पन्न कराता है, तथा गृहीत-गृहीत गणितसे (देखो पु. ३) पूर्वमें ही आत्मसंस्कार उत्पन्न हो जानेसे भी उक्त सूत्र सुगम है ।

इसी प्रकार भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवों तक भागाभागका क्रम है ॥ १० ॥

विशेष इतना है कि अपने अपने जीवोंके प्रमाणका निश्चय कर उससे सर्व

---

१. मु. प्रती अवहारिय इति पाठः ।

सव्वजीवरासिस्स अणंतभागत्तमेदेसि साहेयव्वं ।

इंदियाणुवादेण एइंदिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो? ॥ ११ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ १२ ॥

तं जहा- सिद्ध-तसजीवेहि सव्वजीवरासिमवहारिय लद्धसलागमेत्तखंडाणि सव्वजीवरासि कादूण तत्थ एगभागं मोत्तूण सेसबहुभागेसु गहिदेसु जेण एइंदियपमाणं होदि तेण सव्वजीवाणमणंताभागा एइंदिया होंति त्ति सुत्ते उत्तं ।

बादरेइंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १३ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ १४ ॥

जीवराशिको अपवर्तित कर लब्ध राशिसे सर्व जीवराशिका अनन्तवें भागरूप इनको सिद्ध करना चाहिये ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुसार एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं? ॥ ११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ १२ ॥

वह इस प्रकार है- सिद्ध और त्रसजीवोंसे सर्व जीवराशिको अपहृत कर लब्ध शलाका-प्रमाण सर्व जीवराशिको खण्डित कर उनमें एक भागको छोडकर शेष बहुभागोंके ग्रहण करनेपर चूंकि एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है, इसलिये 'सर्व जीवोंके अनन्त बहुभाग-प्रमाण एकेन्द्रिय जीव होते हैं' ऐसा सूत्रमें कहा है ।

बादर एकेन्द्रिय जीव और उनके ही पर्याप्त व अपर्याप्त जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ १३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १४ ॥

तं जहा– अप्पिदबादरएइंदिएहि सव्वजीवरासिमोवट्टिदे असंखेज्जा लोगा आगच्छंति । ते विरलिय सव्वजीवरासिं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे इच्छिदबादरे-इंदियपमाणं होदि । तम्हा[1] तिण्णि वि बादरेइंदिया सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता त्ति परूविदा ।

सुहुमेइंदिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जा भागा ॥ १६ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियवदिरित्तासेसजीवेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जा लोगा आगच्छंतित्ति ।[2] ते विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरू-वधरिदं मोत्तूण बहुभागेसु सुहुमेइंदियपज्जत्त पमाणुवलंभादो[3] ।

सुहुमेइंदियपज्जत्ता[4] सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ १७ ॥

सुगमं ।

इसीको स्पष्ट करते हैं– विवक्षित बादर एकेन्द्रियोंसे सर्व जीवराशिको अपवर्तित करनेपर असंख्यात लोक आते हैं । उनका विरलन कर सर्व जीवराशिको रूपके प्रति समखण्ड करके देनेपर इच्छित बादर एकेन्द्रियोंका प्रमाण होता है । उसमें तीनों ही बादर एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके असंख्यातवें भागमात्र हैं, ऐसा कहा गया है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ १५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके असंख्यात बहु भागप्रमाण हैं ? ॥ १६ ॥

क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंको छोडकर समस्त जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर असंख्यात लोक आते है, इसलिये उनका विरलन कर सर्व जीवराशिको समखण्ड करके देनेपर उनमें एक रूपके प्रति प्राप्त राशिको छोडकर शेष बहुभागोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका उक्त प्रमाण पाया जाता हैं ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१. मु. प्रती तम्हि इति पाठः । २. मु. प्रती आगच्छंतित्ति इति पाठः ।
३. मु. सुहुमेइंदियपहुडिउत्तप्पमाणुवलंभादो इति पाठः । ४. अ. प्रती अपज्जत्ता इति पाठः ।

संखेज्जा भागा ॥ १८ ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियपज्जत्तवदिरित्तजीवेहि सव्वजीवरासिमोवट्टिय तत्थुवलद्ध-संखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागे सुहुमेइंदियपज्जत्तपमाणुवलंभादो ।

सुहुमेइंदियअपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो? ॥ १९ ॥

सुगमं ।

संखेज्जदिभागो ॥ २० ॥

कुदो ? सुहुमेइंदियअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धसंखेज्ज-रूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगरूवस्सुवरि सुहुमे-इंदियअपज्जत्तपमाणदंसणादो[1] ।

बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अप-ज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २१ ॥

सुगमं ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवोंके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ १८ ॥

क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंको छोड अन्य जीवोंसे सर्व जीवराशिको अपवर्तन करके वहां प्राप्त संख्यात रूपोंका विरलन कर व सर्व जीवराशिको समखण्ड करके प्रत्येक रूपके प्रति देयरूपसे देनेपर वहां एक रूप के प्रति प्राप्त राशिको छोड शेष बहुभागरूप सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण पाया जाता है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं? ॥ १९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ २० ॥

क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर प्राप्त हुए संख्यात रूपोंका विरलन कर सर्व जीवराशिको समखण्ड करके देयरूपसे देनेपर उसमें एक रूपके ऊपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका प्रमाण देखा जाता है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और उन्हींके पर्याप्त व अपर्याप्त जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

---

१. मु. प्रतौ प्रमाणत्तदंसणादो इति पाठः ।

अणंतो भागो ॥ २२ ॥

कुदो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थुवलद्धस्स अणंतियत्तादो।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया बादरा[1] सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २३ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ २४ ॥

कुदो ? एदेहि असंखेज्जालोगमेत्तपमाणेहि पदरस्स असंखेज्जदिभागेहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवाणमुवलंभादो ।

वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २५ ॥

पूर्वोक्त द्वीन्द्रियादि जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २२ ॥

क्योंकि, जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर वहां उपलब्ध राशि अनन्त होती है ।

कायमार्गणाके अनुसार पृथिवीकायिक, पृथिवीकायिक पर्याप्त, पृथिवीकायिक अपर्याप्त; बादर पृथिवीकायिक, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त; इसी प्रकार नौ अप्कायिक, नौ तेजस्कायिक, नौ वायुकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक-शरीर व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त, तथा त्रसकायिक, त्रसकायिक पर्याप्त और त्रसकायिक अपर्याप्त जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं? ॥ २३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २४ ॥

क्योंकि, जगप्रतरके असंख्यातवें भागरूप असंख्यात लोकप्रमाणवाले इन जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप लब्ध होते हैं ।

वनस्पतिकायिक व निगोद जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं? ॥ २५ ॥

---

१. मु. प्रतौ तेउकाइया बादरा इति पाठः ।

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ २६ ॥

कुदो? अप्पिददव्ववदिरित्तसव्वदव्वेहि सव्वजीवरासिमवहारिय[1] लद्धसलागाओ अणंताओ विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय रूवं पडि दिण्णे तत्थ एगरूवधरिदं मोत्तूण बहुभागेसु समुदिदेसु अप्पिदजीवपमाणदंसणादो ।

बादरवणप्फदिकाइया बादरणिगोदजीवा पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २७ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ २८ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्जलोगपमाणुवलंभादो ।

सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ २९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वनस्पतिकायिक व निगोद जीव सर्व जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ २६ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यसे अर्थात् दोनों जीवराशियोंसे भिन्न सर्व द्रव्यों अर्थात् अन्य सब जीवराशियों द्वारा सर्व जीवराशिको अपहृत कर लब्ध हुई अनन्त शलाकाओंका विरलन कर सर्व जीवराशिको समखण्ड कर देयरूपसे प्रत्येक रूपके प्रति देनेपर उसमें एक रूप के प्रतिप्राप्त राशिको छोडकर बहुभागोंके समुदित करनेपर तत्प्रमाण विवक्षित जीवोंका प्रमाण देखा जाता है।

बादर वनस्पतिकायिक, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त, बादर निगोद जीव, बादर निगोद जीव पर्याप्त व बादर निगोद अपर्याप्त सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ २८ ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर असंख्यात लोकप्रमाण लब्ध उपलब्ध होता है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक व सूक्ष्म निगोद जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भाग-प्रमाण हैं ? ॥ २९ ॥

---

१. मु. प्रती मवहारिय इति पाठः ।

सुगमं ।

असंखेज्जा भागा ॥ ३० ॥

कुदो ? अप्पिददव्ववदिरित्तदव्वेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्ध-असंखेज्जलोगमेत्तसलागाओ विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं मोत्तूण बहुखंडेसु समुदिदेसु अप्पिददव्वपमाणुवलंभादो ।

सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३१ ॥

सुगमं ।

संखेज्जा भागा ॥ ३२ ॥

कुदो? अप्पिददव्ववदिरित्तदव्वेहि सव्वजीवरासिमवहरिय[1] लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं मोत्तूण सेसबहुभागेसु समुदिदेसु अप्पिददव्वपमाणुवलंभादो । सुहुमवणप्फदिकाइए भणिदूण पुणो सुहुम-णिगोदजीवे वि पुध भणदि, एदेण णव्वदि जधा सव्वे सुहुमवणप्फदिकाइया चेव

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व जीवोंके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ ३० ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यसे अर्थात् जीवराशियोंसे भिन्न द्रव्योंका अर्थात् अन्य जीवराशियों का सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर वहां उपलब्ध हुई असंख्यात लोकमात्र शलाकाओंका विरलन कर व सर्व जीवराशिको समखण्ड करके देयरूपसे देनेपर उसमें एक खण्डको छोडकर बहु-खण्डोंमें समुदित हुए विवक्षित द्रव्योंका प्रमाण पाया जाता है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त व सूक्ष्म निगोदजीव पर्याप्त सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ३१ ॥

उक्त जीव सर्व जीवोंके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ ३२ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यसे भिन्न द्रव्यों द्वारा सर्व जीवराशिको अपहृत कर लब्ध हुए संख्यात रूपोंका विरलन कर व सर्व जीवराशिको समखण्ड करके देयरूपसे देनेपर एक रूप के प्रतिप्राप्त राशिको छोडकर शेष समुदित बहुभागोंमें विवक्षित द्रव्योंका प्रमाण पाया जाता है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंको कहकर पुनः सूक्ष्म निगोद जीवोंको भी पृथक् कहते

---

१. मु. प्रतौ मवहरिव इति पाठः ।

सुहुमणिगोदजीवा ण होंति त्ति । जदि एवं तो सव्वे सुहुमवणप्फदिकाइया णिगोदा चेवेत्ति एदेण वयणेण विरुज्झदि त्ति भणिदे ण विरुज्झदे, सुहुमणिगोदा सुहुमवणप्फदिकाइया चेवेत्ति अवहारणाभावादो । के पुण ते अण्णे सुहुमणिगोदा सुहुमवणप्फदिकाइये मोत्तूण? ण, सुहुमणिगोदेसु व तदाधारेसु वणप्फदिकाइएसु वि सुहुमणिगोदजीवत्तसंभवादो । तदो सुहुमवणप्फदिकाइया चेव सुहुमणिगोदजीवा ण होंति त्ति सिद्धं । सुहुमणामकम्मोदएण[1] जहा जीवाणं वणप्फदिकाइयादीणं सुहुमत्तं होदि तहा णिगोदणामकम्मोदएण णिगोदत्तं होदि । ण च णिगोदणामकम्मोदओ बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमत्थि जेण तेसिं णिगोदसण्णा होदि त्ति भणिदे- ण, तेसिं पि आहारे आहेओवयारेण णिगोदत्ता-

---

हैं, इससे सब सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ही सूक्ष्म निगोद जीव नहीं होते हैं, यह जाना जाता है।

शंका- यदि ऐसा है तो 'सर्व सूक्ष्म वनस्पतिकायिक निगोद ही हैं' इस वचनके साथ इस कथनका विरोध होता है ?

समाधान- उक्त वचनके साथ यह वचन विरोध को प्राप्त नहीं होता क्योंकि, सूक्ष्म निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ही हैं, ऐसा उक्त सूत्रमें अवधारण नहीं किया है।

शंका— तो फिर सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंको छोडकर अन्य सूक्ष्म निगद जीव कौनसे हैं?

समाधान— नहीं, क्योंकि सूक्ष्म निगोद जीवोंके समान उन निगोद जीवोंके आधारभूत वनस्पतिकायिकोंमें भी सूक्ष्म निगोद जीवत्वकी सम्भावना है। इस कारण 'सूक्ष्म वनस्पति-कायिक ही सूक्ष्म निगोद जीव नहीं होते' यह बात सिद्ध होती है।

शंका- सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे जिस प्रकार वनस्पतिकायिकादिक जीवोंके सूक्ष्मपना होता है, उस प्रकार निगोद नामकर्मके उदयसे निगोदपना होता है। और बादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके निगोद नामकर्मका उदय नहीं है, जिससे कि उनकी 'निगोद' संज्ञा होवे ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके भी आधारमें आधेयका उपचार करनेसे निगोदपना होनेमें कोई विरोध नहीं आता ?

---

१. मु. प्रतौ सुहुमकम्मोदएण इति पाठः ।

विरोहादो। कधमेदं णव्वदे ? णिगोदपदिट्ठिदाणं बादरणिगोदजीवा त्ति णिद्देसादो वणप्फदि[1]काइयाणमुवरि 'णिगोदा विसेसाहिया' त्ति भणिदवयणादो च णव्वदे।

सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ता सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३३ ॥

सुगमं।

संखेज्जदिभागो ॥ ३४ ॥

कुदो? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणमुवलंभादो। एत्थ वि सुहुमवणप्फदिकाइयअपज्जत्तेहिंतो पुव्वंव[2] सुहुमणिगोदअपज्जत्ताणं भेदो वत्तव्वो। णिगोदेसु जीवंति णिगोदभावेण वा जीवंति त्ति णिगोदजीवा एवं तत्तो भेदो वत्तव्वो। णिगोदा सव्वे वणप्फदिकाइया चेव ण अण्णे, एदेण अहिप्पाएण काणि वि भागाभाग-सुत्ताणि ट्ठिदाणि। कुदो? सुहुमवणप्फदिकाइय भागाभागस्स तिसु वि सुत्तेसु णिगोदजीव-

---

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— एक तो निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर निगोद जीव इस प्रकारका निर्देश पाया जाता है, दूसरे वनस्पतिकायिकोंके आगे निगोद जीव विशेष अधिक है इस प्रकार का सूत्र वचन उपलब्ध होता है उससे उक्त बात जानी जाती है।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक व सूक्ष्म निगोद जीव अपर्याप्त सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीव सर्व जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ ३४ ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर संख्यात रूप प्राप्त होते हैं। यहां भी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तोंका बहुनेके समान भेद कहना चाहिये। 'निगोदोंमें जो जीते हैं अथवा निगोदभावसे जो जीते हैं वे निगोदजीव हैं।' इस प्रकार इन दोनोंमें भेद कहना चाहिये।

शंका— 'निगोद जीव सब वनस्पतिकायिक ही हैं अन्य नहीं है' इस अभिप्रायसे कितनेही भागाभागसूत्र स्थित हैं, क्योंकि, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक भागाभागके तीनों ही सूत्रोंमें निगोदजीवोंके निर्देशका अभाव है। इस लिये उन सूत्रोंसे इन सूत्रोंका

---

१. मु. प्रतौ बादरवणप्फदि इति पाठः। २. मु. प्रतौ पुव्वं सुहुम इति पाठः।

णिद्देसाभावादो। तदो तेहि सुत्तेहि एदेसिं सुत्ताणं विरोहो होदि त्ति भणिदे जदि एवं तो उवदेसं लध्दूण इदं सुत्तं इदं चासुत्तमिदि आगमणिउणा भणंतु। ण च अम्हे एत्थ वोत्तुं समत्था, अलद्धोवदेसत्तादो।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि-वेउव्वियकायजोगि-वेउव्वियमिस्सकायजोगि – आहारकायजोगि – आहारमिस्सकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो? ॥ ३५ ॥

सुगमं।

अणंतो भागो ॥ ३६ ॥

कुदो? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो।

कायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो? ॥ ३७ ॥

सुगमं।

अणंता भागा ॥ ३८ ॥

विरोध होता है?

समाधान– यदि ऐसा है तो उपदेशको प्राप्त कर 'यह सूत्र है और यह सूत्र नहीं है' ऐसा आगमनिपुण जन कह सकते हैं। किन्तु हम यहां कहनेके लिये समर्थ नहीं हैं, क्योंकि, हमे वैसा उपदेश प्राप्त नहीं है।

योगमार्गणाके अनुसार पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी, आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ३६ ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप प्राप्त होते हैं।

काययोगी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं? ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है।

काययोगी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ३८ ॥

कुदो ? अप्पिदवव्वदिरित्तसव्वदव्वेहि सव्वजीवरासिमवहिरिज्जमाणे लद्ध-अणंतसलागाओ विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं[1] मोत्तूण सेसबहुभागेसु समुदिदेसु कायजोगिदव्वपमाणुवलंभादो ।

ओरालियकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ३९ ॥

सुगमं ।

संखेज्जा भागा ॥ ४० ॥

कुदो ? अणप्पिदसव्वदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाण-मुवलंभादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४१ ॥

सुगमं ।

संखेज्जदिभागो ॥ ४२ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यसे भिन्न सब द्रव्यों द्वारा सर्व जीवराशिको अपहृत करनेपर प्राप्त हुई अनन्त शलाकाओंका विरलन कर व सर्व जीवराशिको समखण्ड करके देयरूपसे देनेपर वहां एक रूपके प्रति प्राप्त राशिको छोडकर शेष समुदित बहुभागोंमें काययोगी द्रव्यका प्रमाण पाया जाता है ।

औदारिककाययोगी जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ३९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदारिककाययोगी जीव सब जीवोंके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ ४० ॥

क्योंकि, अविवक्षित सर्व द्रव्यका सब जीवराशिमें भाग देनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं । उनमें एक भागको छोडकर शेष बहुभागप्रमाण औदारिककाययोगी जीव होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीव सब जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ ४२ ॥

---

१. अ. आ. प्रत्योः तत्थेयरूवधरिदं इति पाठ ।

कुदो ? अप्पिददव्वेण सव्वरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणमुवलंभादो।

कम्मइयकायजोगी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४३ ॥

सुगमं

असंखेज्जदिभागो ॥ ४४ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे असंखेज्ज[1]रूवोवलंभादो।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा अवगदवेदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४५ ॥

सुगमं।

अणंतो भागो ॥ ४६ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो।

णवुंसयवेदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४७ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं। उनमेंसे एक भागप्रमाण औदारिकमिश्र काययोगी जीव होते हैं।

कार्मणकाययोगी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

कार्मणकाययोगी जीव सब जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ ४४ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर असंख्यात रूप उपलब्ध होते हैं। उनमेंसे एक भागप्रमाण कार्मणकाययोगी जीव होते हैं।

वेदमार्गणाके अनुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और अपगतवेदी जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ४६ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्योंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं। उनमेंसे एक भागप्रमाण उक्त प्रत्येक मार्गणावाले जीव होते हैं।

नपुंसकवेदी जीव सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४७ ॥

---

१. अ. क. प्रत्योः संखेज्ज इति पाठः।

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ४८ ॥

कुदो ? अणप्पिदसव्वदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

चदुब्भागो देसूणा ॥ ५० ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे सादिरेयचत्तारिरूवोवलंभादो ।

लोभकसाई सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

चदुब्भागो सादिरेगो ॥ ५२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नपुंसकवेदी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

क्योंकि, अविवक्षित सर्व द्रव्यका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

कषायमार्गणाके अनुसार क्रोधकषायी, मानकषायी और मायाकषायी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सब जीवोंके कुछ कम एक चतुर्थ भागप्रमाण हैं ॥ ५० ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर साधिक चार रूप उपलब्ध होते हैं ।

लोभकषायी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

लोभकषायी जीव सब जीवोंके साधिक चतुर्थ भागप्रमाण हैं ॥ ५२ ॥

कुदो ? लोभकसाइदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे किंचूणचत्तारिरूवो-वलंभादो ।

अकसाई सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

अणंतो भागो ॥ ५४ ॥

कुदो ? अकसाइदव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणी[1] सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५५ ॥

सुगमं

अणंता भागा ॥ ५६ ॥

कुदो ? अणप्पिदणाणेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

क्योंकि, लोभकषायी द्रव्यका सर्व जीवराशिमें भागदेनेपर कुछ कम चार रूप प्राप्त होते हैं ।

कषायरहित जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कषायरहित जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ५४ ॥

क्योंकि, कषायरहित द्रव्यका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप प्राप्त होते हैं ।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मतिअज्ञानी और श्रुतअज्ञानी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मतिअज्ञानी और श्रुतअज्ञानी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ५६ ॥

क्योंकि, अविवक्षित ज्ञानवाले जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

---

१. अ-क सुदअण्णाणी इति पाठो नास्ति ।

विभंगणाणी आभिणिबोहियणाणी सुदणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५७ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ५८ ॥

कुदो ? अप्पिददव्वेण सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

संजमाणुवादेण संजदा सामाइयछेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा परिहारसुद्धिसंजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदा संजदासंजदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ५९ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ६० ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो ।

असंजदा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६१ ॥

विभंगज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्ययज्ञानी और केवलज्ञानी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ५८ ॥

क्योंकि, विवक्षित द्रव्यका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

संयममार्गणाके अनुसार संयत, सामायिकछेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत, परिहारशुद्धिसंयत, सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत और संयतासंयत जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ६० ॥

क्योंकि, इनका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप प्राप्त होते है ।

असंयत जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ६२ ॥

कुदो? अणप्पिदसव्वसंजदेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे अणंतरूवोवलंभादो।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

अणंतभागो ॥ ६४ ॥

कुदो ? एदेहि सव्वजीवरासिमवहिरदे अणंतभागोवलंभादो ।

अचक्खुदंसणी सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६५ ॥

सुगमं ।

अणंता भागा ॥ ६६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयत जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ६२ ॥

क्योंकि, अविवक्षित सर्व संयतोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप प्राप्त होते हैं ।

दर्शनमार्गणानुसार चक्षुदर्शनी, अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ६४ ॥

क्योंकि, इनके द्वारा सर्व जीवराशिको अपहृत करनेपर अनन्तवां भाग उपलब्ध होता है ।

अचक्षुदर्शनी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अचक्षुदर्शनी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ६६ ॥

कुदो? अचक्खुदंसणीहि सव्वरासिम्हि भागे हिदे एगरूवस्स अणंतिम भागसहिदएगरूवोवलंभादो ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६७ ॥

सुगमं ।

तिभागो सादिरेगो ॥ ६८ ॥

कुदो ? किण्हलेस्सिएहि सव्वजीवरासिम्मि भागे हिदे किंचूणतिण्णिरूवोवलंभादो ।

णीललेस्सिया काउलेस्सिया सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ६९ ॥

सुगमं ।

तिभागो देसूणो ॥ ७० ॥

क्योंकि, अचक्षुदर्शनियोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर एक रूपके अनंतवें भाग सहित एक रूप उपलब्ध होता है ।

लेश्यामार्गणाके अनुसार कृष्णलेश्यावाले जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६७ ॥

यह सूत्र सुगम है :

कृष्णलेश्यावाले जीव सब जीवोंके साधिक एक त्रिभागप्रमाण हैं ? ॥ ६८ ॥

क्योंकि, कृष्णलेश्यावाले जीवोंका सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर कुछ कम तीन रूप उपलब्ध होते हैं ।

नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नील और कापोतलेश्यावाले जीव सब जीवोंके कुछ कम एक त्रिभागप्रमाण हैं ? ॥ ७० ॥